100% NATURAL AYURVEDIC | VEDIC FORMULA | NO CHEMICALS

SURYAVEDIC NATURALS

सूर्यवैदिक नेचुरल्स

The Essence of Nature • The Wisdom of Vedas

✦ प्राचीन आयुर्वेद की शक्ति — आधुनिक जीवन के लिए • **Ancient Power of Ayurveda for Modern Life** ✦

01 SURYAMRIT PRASH — सूर्यमृत प्राश

FOR MEN & WOMEN • पुरुष एवं स्त्री दोनों के लिए

कामसूत्र ग्रंथ पर आधारित यह अमृत-समान प्राश पुरुषों की वीर्य वृद्धि, शक्ति और स्तंभन शक्ति के लिए तथा स्त्रियों की गर्भधारण क्षमता के लिए विशेष रूप से लाभकारी है। गुप्त रोग से पीड़ित पुरुषों और गर्भधारण में असमर्थ स्त्रियों के लिए यह अमृत के समान वरदान औषधि है।

Based on the ancient Kamasutra scripture — this nectar-like Prash is especially beneficial for men suffering from sexual disorders and women unable to conceive. According to the Kamasutra, consuming it for **21 days leads to great enhancement of semen and strength**, and with regular use for **108 days**, complete freedom from all diseases is attained.

- ◆ **वीर्य वृद्धि**
  Semen & Vitality Enhancement
- ◆ **स्तंभन शक्ति**
  Stamina & Duration Enhancement
- ◆ **गर्भधारण सहायक**
  Fertility Support for Women
- ◆ **समस्त रोगनाशक**
  General Wellness & Immunity

ग्रंथ आधार - इस प्राश की निर्माण विधि योग रत्नाकर, कोकशास्त्र, भैष्जय संहित एवं कामसूत्र ग्रंथ (प्राचीन संस्करण) - इन चारों ग्रंथों में वर्णित है। प्रत्येक ग्रंथ में औषधीयों व प्रक्रिया में किंचित भेद है। हमने प्राचीन कामसूत्र ग्रंथ के योग को आधार मानकर इसे अवलेह/प्राश के रूप में तैयार किया है , जिससे यह बनाने में सुलभ एवं दीर्घकाल तक सुरक्षित रहे। ग्रंथ में दी गई औषधीयां आंवले की पिष्टी में तैयार की गई है।

Scriptural Basis: The preparation method of this Prash is described in all four scriptures — Yoga Ratnakar, Kokashastra, Bhaishjya Samhita and Kamasutra (ancient edition). There is a slight difference in medicines and process in each scripture. We have taken the formula of the ancient Kamasutra scripture as the basis and prepared it in the form of Avleh/Prash, so that it is easy to make and remains safe for a long period of time. The medicines given in the scripture have been prepared in Amla Pishti.

KAMASUTRA SCRIPTURE — SHLOKA 141–159

सूतो गन्धस्तथा लौहं त्रसमं शुद्धमभ्रकम। सैन्धवं मांसी धात्र्येला च कटुत्रयम्।।१४१ जातीकोषफलं पत्रं लवंग जीरकद्वयम्। यष्टीमधु वचा ह रद्रा नागरं।। १४२ तालीशपत्रश्च द्राक्षाऽ ग्रदन्तमूलकम्। चा तबला चोचं ध नकेभकणा शटी।।१४३ जलदं गन्धा वदारी च शतावरी। वानरी बीजश्च गोक्षुरं शाल्मलीमूलकम्।।१४४ त्रैलोक्य वजयाबीजं समांशं पेषयेद् भषक। मोदकाथ सता देया पाकयोग्या तथा मधु।।१४५ ना तवाहयश्व धूमान्ते पाचयेन्मन्दविहवना। चातुजातं सैन्धवं सकटुत्रयम्।।१४६ सञ्चूण्य च ततो देयं हव्यं किञ्चिन्नधापयेत्। पाकं ज्ञात्वा शाण मदं मोदकं प रेकल्पयेत्।। १४७ काञ्चने राजते काचे मृद्भाण्डे वा नधापयेत्। गव्यक्षीरं सतायुक्तमनुपेयश्च पायसम्।।१४८ वलासाथ प्रदोषे च मोदकं प रसेवयेत्। त्रसप्ताहप्रयोगेण कामान्धो जायते नरः।।१४९ कामज्वरो भवेत्तावद्यावन्नारीं न गच्छ त। स सहस्त्रंवरारोहां रमयत्य प सोद्गमः।।१५० न च लंगस्य शैथल्यं वेगवीय ववद्धयेत्। प्रमदाप्राणबाहल्यं मत्तवारण वक्रमः ।। १५१ वामावश्यकरो रम्य ऊध्वरेता भवेन्नरः। कामतुल्यं भवेद्रूपं स्वरः परभृतोपमः।।१५२ खगतुल्या भवेद्दिष्टवृद्धोऽ प तरूणायते। अष्टोत्तरं भवेद्यस्तु भवेत्तस्य सुधोपमम्। ।१५३ वीयवृद् धकरं श्रेष्ठं जरामृत्यु वनाशनम्। अपस्मारज्वरोन्मादक्षया नलगदापहम्।।१५४ कासं श्वासं सशोथं च भगन्दरगुदामयम्। अिग्नमानद्यमतीसारं व वधं ग्रहणीगदम्।। १५५ बहुमूत्रं प्रमेहं च शरोरोगमरोचकम्। हिन्त सवगदान् घोरान् वात पत्तबलासजान्।। १५६ बन्धया च मृतवत्सा च नष्टपुष्पा च या भवेत्। बहुपुत्रा जीवदवत्सा भवेदस्य नपैवणात्।।१५७ हरते सू तकारोगं वृक्ष मन्द्राश नयथा। मोदकं मदनानन्दं सवरोगे महौषधम्।।१५८ कथतं देवदेवेन रावणस्य हता थना।।१५९

"त्रिसप्ताह प्रयोगेण कामान्धो जायते नरः। न च लिंगस्य शैथिल्यं वेगवीर्यं विवर्द्धयेत्।"
21 दिन के सेवन से पुरुष अत्यंत बलशाली होता है एवं लिंग शिथिल नहीं होता।

अर्थ - शुद्ध पारद, शुद्ध गंधक, लौह भस्म तथा तीनों के समान अभ्रक भस्म, सैन्धव लवण, जटामांसी, आंवला, छोटी इलायची, सौंठ , काली मिर्च, पिप्पली , जावित्री, जायफल, तेजपत्र, लौंग , श्वेत जीरा, मुलेठी, वच, हरिद्रा, नागकेसर, तालिस पत्र, चित्रक छाल, बला की जड़, दालचीनी, धनिया, अश्वगंधा, विदारीकंद, शतावर, कौंच के शुद्ध बीज, गोखरू, सेमल मूसली, भांग के शुद्ध बीज प्रत्येक लेकर चूर्ण बना लें। फिर पारद गंधक की कज्जली तथा शेष लौह भस्म एवं अभ्रक भस्म भी मिला दें पश्चात संपूर्ण चूर्ण से दोगुनी खांड में मिलाकर पाक करें तथा चासनी हो जाने पर पूर्वोक्त समस्त चूर्ण मिलाकर मंद मंद अग्नि से पाक गाढ़ा होने पर दालचीनी, छोटी इलायची, तेजपत्र, नागकेसर, सैन्धव लवण, त्रिकटु के मिलित चूर्ण का प्रक्षेप देकर यथोचित मात्रा में शहद और घृत मिलाकर चार चार माशे के मोदक बना लें। इन मोदकों को स्वर्ण, रजत, काच या मृत्पात्र मे रख दें। शर्करायुक्त गौदुग्ध से मोदक का सेवन करें। संभोग शक्ति की वृद्धि के लिए संध्या के समय इस मोदक का सेवन करें। इस प्रकार तीन सप्ताह तक निरंतर सेवन करने से मनुष्य कामान्ध हो जाता है तथा जब तक स्त्रियों के साथ संभोग नही करता है तब तक कामज्वर से पीड़ित रहता है तथा प्रबल वीर्य के वेग से युक्त होकर हजारों सुन्दर स्त्रियों के साथ संभोग करने पर भी लिंग शैथिल्य को प्राप्त नही होता है। इसका सेवन करने वाला मनुष्य कामोन्मत स्त्रियों का अत्यंत प्राणप्रिय , मदोन्मत हस्ती के समान बलवान, स्त्रियों को वश में करने वाला, सुंदर, ऊर्ध्व वीर्यगति सम्पन्न, कामदेव के समान रूपवान, कोकिल के समान मनोहर स्वर युक्त तथा गरूड़ के समान दूर तक देखने वाला हो जाता है। जो मनुष्य १०८ मोदकों का सेवन कर लेता है तो वह अमृत सेवन के समान शारीरिक सम्पदा युक्त हो जाता है तथा वीर्य वृद्धि होकर जरा तथा मृत्यु रोग से रहित हो जाता है। यह मोदक अपस्मार, ज्वर, उन्माद, क्षय, वायु के रोग, कास, श्वास, शोध, भगन्दर, अर्श , अग्निमान्द्य, विविध प्रकार का अतिसार, ग्रहणी विकार, बहुमूत्र, प्रमेह, शिरोरोग, अरूचि तथा भयंकर वातज , पित्तज, और कफज रोगों को नष्ट करता है। बन्धया, मृतवत्सा और नष्टपुष्पा स्त्री इसको सेवन करके बहुपुत्रा तथा जीवद्वत्सा हो जाती है। यह सूतिका रोग को ऐसे नष्ट करता है जैसे इन्द्र का वज्र वृक्षों को तथा सर्व रोगों में अत्यन्त हितकर हैं। रावण के हित को चाहने वाले महादेव जी ने इस मोदक को कहा है।

English Meaning

Take equal quantities of Shuddha Parad, Shuddha Gandhak, Lauha Bhasma and Abhrak Bhasma (equal to the combined weight of all three), Saindhav Lavan, Jatamansi, Amla, Chhoti Elaichi, Saunth, Kali Mirch, Pippali, Javitri, Jayphal, Tejpatra, Laung, Shwet Jeera, Mulethi, Vach, Haridra, Nagkesar, Talis Patra, Chitrak Chhaal, Bala ki Jad, Dalchini, Dhaniya, Ashwagandha, Vidaari Kand, Shatavar, Kaunch ke Shuddha Beej, Gokhru, Semal Musli, Bhaang ke Shuddha Beej — grind each into powder. Then add Kajjali (prepared from Parad and Gandhak), Lauha Bhasma and Abhrak Bhasma into it. After that, mix the entire powder into double the quantity of sugar and cook it. When the syrup is ready, add all the previously prepared powders and cook on slow flame until thick. Then add a mixture of Dalchini, Chhoti Elaichi, Tejpatra, Nagkesar, Saindhav Lavan and Trikatu powder, and mix appropriate quantities of honey and Ghrit to prepare Modak of four Masha each. Store these Modak in gold, silver, glass or clay vessels. Consume the Modak with sugar-mixed cow's milk. For enhancement of sexual power, consume this Modak in the evening. By consuming it continuously for three weeks, a man becomes intensely desirous and remains in a state of passionate fever until he engages in intercourse with a woman. Endowed with the force of powerful semen, even after intercourse with thousands of beautiful women, his organ does not become limp. The man who consumes this becomes extremely dear to passionate women, as strong as a mighty elephant in rut, one who wins over women, handsome, possessing upward flow of semen, as beautiful as Kamadeva, having a melodious voice like a Cuckoo and possessing far-sighted vision like Garuda. The man who consumes 108 Modak becomes endowed with physical wealth equivalent to consuming nectar, his semen increases greatly and he becomes free from old age and death.This Modak destroy Epilepsy (Apasmaar), Fever (Jwar), Mental disorders (Unmaad), Tuberculosis (Kshay), Neurological disorders (Vayu), Cough (Kaas), Asthma (Shwas), Inflammation (Shotha), Fistula-in-ano (Bhagandar), Piles (Arsh), Indigestion (Agnimaandya), various types of Diarrhea (Atisaar), Irritable Bowel Syndrome (Grahani Vikaar), Frequent Urination (Bahumootra), Urinary disorders (Prameh), Head disorders (Shiro Rog), Loss of appetite (Aruchi) and severe Wind disorders (Vataj), Inflammatory disorders (Pittaj) and Phlegm disorders (Kaphaj). A Bandhya (barren woman), Mritvatsa (woman who gives birth to stillborn children) — by consuming this, she becomes blessed with many children and living offspring. It destroys Sootika Rog (post-delivery disorders) just as Indra's thunderbolt destroys trees, and it is extremely beneficial in all diseases. This Modak has been described by Mahadeva himself, out of his concern for the well-being of Ravana.

🌿 प्रमुख सामग्री — KEY INGREDIENTS (Kamasutra Aadhaarit)

अश्वगंधा Ashwagandha	शतावर Shatavar	कौंच बीज Kaunch Beej	गोखरू Gokhru
विदारीकंद Vidaari Kand	मुलेठी Mulethi	जायफल Jayphal	अभ्रक भस्म Abhrak Bhasma
शुद्ध पारद Shuddha Parad	जटामांसी Jatamansi	सेमल मूसली Semal Musli	**+ 20** जड़ी-बूटियां + 20 More Herbs

⊕ सेवन विधि / DOSAGE & USAGE

- **5–6** ग्राम (एक चम्मच) प्रतिदिन — 5–6g (1 teaspoon) daily
- सूर्यास्त से पूर्व दूध के साथ लें — Take with milk before sunset
- प्रातः एवं सायं **15–20** मिनट अश्विनी मुद्रा योग करें — Morning & evening Ashwini Mudra

📅 परिणाम कब दिखेंगे — RESULTS TIMELINE

21	60	108
दिन / Days	दिन / Days	दिन / Days
वीर्य वृद्धि एवं शरीर बलवान Strength & Vitality boost begins	स्तंभन शक्ति एवं आत्मविश्वास Enhanced stamina & confidence	सम्पूर्ण रोग मुक्ति Complete disease freedom

02 SURYAMRIT TABLET — सूर्यमृत टैबलेट

FOR MEN ONLY • विशेष रूप से पुरुषों के लिए

भैषज्य रत्नावली ग्रंथ पर आधारित यह टैबलेट उन पुरुषों के लिए है जिनकी पार्टनर उनसे तृप्त नहीं होती अथवा संभोग के क्षण में चरम सुख को प्राप्त नहीं होती । यह टैबलेट शारीरिक क्षमता एवं संभोग के समय को बढ़ाकर आत्मविश्वास बढ़ाता है। शीघ्रपतन और स्वप्न दोष के लिए अचूक उपाय है।

Based on Bhaishjya Ratnavali — **Suryamrit Tablet** is for those men whose partner is not satisfied by them or does not achieve climax at the moment of intercourse, due to which conflict arises in marital life. This tablet enhances your physical capacity and duration of intercourse, thereby boosting your confidence. It is an infallible remedy for **Premature Ejaculation (Sheeghrapatan)** and **Nightfall (Swapna Dosh).** . For best results, always take this tablet alongside Suryamrit Prash.

ग्रंथ आधार - यह टेबलेट आयुर्वेदिक ग्रंथ भैष्जय रत्नावली पर आधारित है। ग्रंथ में कज्जली एवं कनक बीज द्वारा यह योग बनाने का विधान है और मात्र आधी रत्ती (62 मि.ग्रा) बताई गई है। क्योंकि इतनी छोटी टैबलेट बनाना संभव नहीं, अतः ग्रंथ 62 मि.ग्रा द्रव्य के साथ अश्वगंधा आदि महत्वपूर्ण औषधीय मिलाकर 500 मि.ग्रा की पूर्ण टैबलेट तैयार की गई है।

Scriptural Basis - This tablet is based on the Ayurvedic text Bhaishjya Ratnavali. The text prescribes this formulation using Kajjali and Kanak Beej, with a dosage of half Ratti (62 mg). Since preparing such a small tablet is not practically feasible, the prescribed 62 mg of these core ingredients has been combined with important herbs like Ashwagandha and others to prepare a complete 500 mg tablet — without affecting its efficacy in any way.

- ◆ शीघ्रपतन निवारण
  Premature Ejaculation Treatment
- ◆ स्वप्न दोष निवारण
  Nightfall Treatment
- ◆ संभोग समय वृद्धि
  Duration & Stamina Enhancement
- ◆ आत्मविश्वास वृद्धि
  Boosts Confidence & Marital Harmony

BHAISHJYA RATNAVALI — SHLOKA 68–69

कज्जलीकृत सुगन्धकशम्भो स्तुल्यमेव कनकस्य ह बोजम् । मदयेत्कनक तैलयुतं स्यात् कामनीमद्वधूनन एषः ॥ ६८ ॥ रिक्तकाऽद्धमह चास्य सताढचं से वतं हरत मेहगदौघान् । वीयदाढयकरणं कमनीयं द्रावणं नधुवने वनितानाम् ।। ६६ ।।

अर्थ- शुद्ध पारद और शुद्ध गन्धक दोनों की कज्जली कर के उसमें दोनों के बराबर कनक के शुद्ध बीजों का चूर्ण मिला कर कनक के बीजों के तैल से भावित कर खरल कर के सुखा लेने से कामिनी के मद्द को विधूनन (नष्ट) करने वाला यह तन्त्रामक रस सिद्ध हो जाता है। इस रस को आधी रत्ती प्रमाण में लेकर शर्करा के साथ मिलाकर सेवन करने से सर्व प्रमेह नष्ट हो जाते हैं। यह रस मनुष्यों के वीर्य को दृढ़ करता है तथा स्त्रियों को स्खलित कराने में अत्यन्त श्रेष्ठ है

English Meaning

By preparing Kajjali from Shuddha Parad and Shuddha Gandhak, then mixing an equal quantity of purified Kanak seed powder into it, triturating it with Kanak seed oil and drying it — this powerful Tantric Ras is prepared, which is capable of vanquishing (destroying) the intoxication of a passionate woman. By consuming this Ras in a quantity of half Ratti (62 mg) mixed with sugar, all types of Prameh (urinary and seminal disorders) are destroyed. This Ras firmly strengthens the semen of men and is extremely superior in causing climax (Orgasm) in women.

"वीर्यदाढ्यकरणं कमनीयं द्रावणं निधुवनेवनितानाम्"
यह रस वीर्य को दृढ़ करता है तथा संभोग शक्ति को अत्यंत बढ़ाता है।

⊕ सेवन विधि / DOSAGE & USAGE

- ◆ वीर्य वृद्धि एवं बल हेतु: प्रातः भोजनोपरांत खांड मिश्रित दूध के साथ 1 टैबलेट — 1 tablet with jaggery-milk after breakfast
- ◆ संभोग शक्ति हेतु: रात्रि शयन से 1–2 घंटे पूर्व सूर्यमृत प्राश के साथ — With Suryamrit Prash 1–2 hrs before bedtime
- ◆ **500 mg tablet** — Kanak Beej + Kajjali (62mg core) + Ashwagandha & Vedic herb blend
- ◆ प्रातः एवं सायं 15–20 मिनट अश्विनी मुद्रा अभ्यास करें — Morning & evening Ashwini Mudra practice

★ **BEST RESULTS** — सर्वोत्तम परिणाम ★

Suryamrit Prash + Suryamrit Tablet

दोनों को साथ लेने पर परिणाम दोगुने होते हैं — Combined use doubles effectiveness.

Certified by

सत्यमेव जयते
Ministry of Ayush
Government of India

fssai

GOOD MANUFACTURING PRACTICE
GMP
CERTIFIED
CERTIFIED

SURYAVEDIC NATURALS

The Essence of Nature • The Wisdom of Vedas

Order Now — suryavedic.in

9548300953 • 9389798368

WhatsApp पर सम्पर्क करें — विशेषज्ञ परामर्श निःशुल्क | Free Expert Consultation on WhatsApp